cgeyhu lnx|: MkW0 djrkj flag th egkjkt
[tUe 13 tu 1912 fuokZ.k %15 tu 2012]

रामाश्रम सत्संग के **io** सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष, परमपूज्य डॉ0 करतार सिंह जी महाराज (पूज्य सरदार जी) का जन्म 13 जून 1912 को अमृतसर (पंजाब) में हुआ था । जब आपकी आयु मात्र 3 o"kZ की थी, आपके पिताश्री पूज् य सन्त सिंह साहब ने अमृतसर से आकर मुलतान शहर में एक दुकान हनुमान जी के प्रसिद्ध मंदिर के पास खोली । पूज्य करतार सिंह जी जन्म से ही धार्मिक प्रवृति के थे तथा वह प्रत्येक शनिवार उस हनुमान जी के मंदिर में दर्शन करने व चोला चढ़ाने जाया करते थे । वहीं पास में नरसिंह भगवान का प्रसिद्ध मंदिर भी था। मुल्तान शहर सूफी संतों का शहर कहलाता Fkk जहाँ की चार चीजें मशहूर Fkh – चार तोहफा, अज मुल्तान, गर्देगरमा तथा गदा-ए-रेगिस्तान। **ml le;** मुल्तान शहर में हर तरफ संत ही संत (फकीर ही फकीर) हैं तथा चारों तरफ कब्रें तथा मजारें हैं। तथा रेगिस्तान की धूल उडती रहती Fkh। आपने मुल्तान से प्री-मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की।

जब आपकी आयु लगभग 15 वर्ष की थी, आपके पूज्य पिताश्री परलोकवासी हो गए तथा आप अमृतसर वापस आ गए । इतनी कम आयु में ही आप पर अपने परिवार (पूज्य माताजी – छोटी बहिन तथा भाई) का दायित्व आ गया । प्रारम्भ में आपने एक प्रायवेट नौकरी की किन्तु कुछ ही माह बाद आपको आयकर विभाग में लिपिक की नौकरी मिल गई । बाद में आप जालंधर में आयकर विभाग में इन्सपेक्टर हो गए । वहॉ से आप देहली चले आये । आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए. एल.एल.बी. की तथा सी.ए. एवं कम्पनी सेक्रेटरीज की प्रथम वर्ष की परीक्षाऍ पास कीं । सन् 1947 में आपका विचार आयकर की प्रेक्टिस करने का हुआ । आपने अपने एक मुसलमान मित्र से कहा कि उन्हें एक जगह चाहिए, उस मित्र ने कहा कि मेरा एक होम्योपैथिक स्टोर है, आप वह संभाल लो । पूज्य करतार सिंह जी ने वह दुकान (फतहपुरी स्थित नेशनल होम्योपैथिक स्टोर) सम्भाल ली । ईश्वर की कृपा से स्टोर अच्छा चलने लगा ।

आपके होम्योपैथिक स्टोर पर एक सौम्य व्यक्तित्व, मधुर मुस्कान, शान्त प्रकृति के संत-पुरूष दवा लेने आया करते थे । वह जब भी दवा लेने आते थे पूज्य करतार सिंह जी

पर अपनी कृपा की वर्षा अवश्य करते थे । आप भी उन महापुरूष से बहुत प्रभावित थे तथा आपके मन में उनसे बात करने की हमेशा जिज्ञासा बनी रहती थी । यह संत महापुरूष थे परमसंत डॉ0 कृष्णलाल जी महाराज (सिकन्द्रावादी) तथा पूज्य करतार सिंह जी उनकी बिछुड़ी हुई आत्मा थी जिसे उन्होंने पहचान लिया था तथा अपनी कृपा दृष्टि गुप्त रूप से उन पर डालते रहते थे ।

आप प्रथम बार डॉ0 श्रीकृष्ण लाल जी महाराज की सेवा में सन् 1951 में श्री गिरवर कृष्ण भटनागर जी (पूज्य डॉ0 श्रीकृष्ण लाल जी के लघु भ्राता) के तीमारपुर (दिल्ली) निवास पर आयोजित सत्संग में श्री श्रीराम भार्गव (आयकर वकील) के आग्रह पर उपस्थित हुए । सत्संग की समाप्ति पर अन्य लोगों को जाने की आज्ञा मिल गई । किन्तु आपको कहा गया कि ''आप रूकिए ।'' इन शब्दों में अदभुत प्रेम था । कुछ क्षण मौन रहने के पश्चात् गुरूदेव डॉ0 श्री कृष्णलाल जी ने कहा ''हम आपके घर चलेंगें'' । दोनों की आत्माऐं पूर्व परिचित थीं तथा पूज्य डॉ0 श्री कृष्णलाल जी ने डॉ0 करतार सिंह जी में गुरूमुख शिष्य (मुराद) को पहचान लिया था । पूज्य डॉ0 कृष्णलाल जी डॉ0 करतार सिंह जी के निवास पर गये तथा प्रेमपूर्वक भोजन ग्रहण किया और बड़े प्रसन्न हुए ।

इस प्रथम मिलन के पश्चात् पूज्य डॉ0 करतार सिंह जी पूज्य डॉ0 श्री कृष्णलाल जी की सेवा में सिकन्दराबाद या गाजियाबाद, जहॉ भी गुरूदेव पधारे होते थे, आने लगे तथा शनैः शनैः उनमें गुरू प्रेम प्रस्फुटित, पल्लवित और पुष्पित होने लगा तथा उन्होंनें अपना तन-मन-धन सच्चे अर्थो में गुरूदेव के चरणों में अर्पित कर दिया ।

एक बार आपकी चाह उठी कि घर छोड़कर सन्यासी हो जाऍ । गुरूदेव से आज्ञा मॉगी तो गुरूदेव ने आदेश दिया कि ''आप (अपनी) दुकान पर मालिक की हैसियत से काम न करें बल्कि एक नौकर की हैसियत से काम करें, और हैं भी आप मुलाजिम (नौकर) ही । गलती से आप अपने को मालिक समझे हुए हैं । अगर दुकान आपके साथ आई होती तो आपके साथ जाती । ऐसा है नहीं । आपकी परेशानी का यही कारण है ।''

सन् 1960 में आपकी विधिवत गुरूदीक्षा हुई । आध्यात्मिक शिक्षा आप को मौन में मिलती रही। जब कभी और भाईयों को गुरूदेव के साथ बातचीत करते देखते, जिसका विषय

बहुधा आध्यात्मिक ही होता था, उसमें भाई लोग अपने-अपने अभ्यास की बातें बताया करते थे और गुरूदेव उन्हें खूब समझाते थे । इसे देखकर आप परेशान होते थे कि गुरूदेव ने मुझे तो कोई विशेष अभ्यास बताया ही नहीं और न ही इस विशय में गुरूदेव मुझ से कोई बात करते हैं । आप ने स्वंय तो अपनी इस मानसिक स्थिति की कोई चर्चा गुरूदेव से नहीं की किन्तु गुरूदेव ने उनके मन की बात भॉप ली और बड़े प्रेम पूर्वक कहने लगे कि ''सरदार जी, आप क्यों परेशान होते हैं । मैं जो कुछ कर रहा हूँ सब आप के ही लिए तो कर रहा हूँ ।''

आप ने एक सच्चे और दीन शिष्य के रूप में गुरूदेव के समक्ष अपने आपको समर्पित किया । आपको जो भी आज्ञा दी गई वह आपने अक्षरशः पालन की ।

पूज्य गुरूदेव जब भी बाहर सत्संग के दौरे पर जाते तो पूज्य सरदार जी ही सदैव उनके साथ जाते Fk और सेवा कार्य में पूज्य गुरूदेव का हाथ बटाते थे । पूज्य गुरूदेव अपने समकालीन संत मत के अन्य सन्तों के पास भी पूज्य सरदार जी को ले जाते तथा अपने चयन की पुष्टि कराते थे । एक बार पूज्य गुरूदेव माउन्ट आबू में एक उच्च कोटि के संत से मिलने गए और अपने उत्तराधिकारी की बात उनके सामने रखी । तब उन संत जी ने कहा था कि ''डाक्टर साहब, आपका बोझा तो एक सरदार ढोयेगा।'' पूज्य गुरूदेव का पूज्य सरदार जी के प्रति जो प्रेम और विश्वास था उसे देखकर यह स्पष्ट संकेत मिलने लगे थे कि आप ही पूज्य गुरूदेव के उत्तराधिकारी होगें । हुआ भी ऐसा ही । नबम्बर 1969 में आपको पूज्य गुरूदेव ने आचार्य पदवी प्रदान की।

8 फरवरी 1970 को वसंत पंचमी के दिन सिकन्दराबाद में सम्पन्न भण्डारे में पूज्य गुरूदेव ने फरमाया कि ''बन्दा शायद अगले भण्डारे तक न रह पाए इसलिए इस सत्संग का भार मैं डॉ0 सरदार करतार सिंह, डॉ0 हरिकृष्ण और बसंत बाबू को सौपता हूँ । इन तीनों को मुकम्मिल (पूर्ण) इजाजत है और सरदार जी इनके बड़े भाई हैं, जिनकी देख रेख में थे दोनों सत्संग की जिम्मेदारियों को सम्भालेंगे।'' फिर जो गद्दी पूज्य गुरूदेव के बैठने के लिए बिछी थी, उस पर पूज्य सरदार जी को बैठने का आदेश दिया । कई बार आग्रह करने पर आप उस गद्दी तक गए, अपना दाहिना हाथ उस पर रखकर वापस पूज्य गुरूदेव के पांयते

जमीन पर बैठ गए । कुछ देर बड़ी गंभीर मुद्रा में बैठे रहे और फिर गदगद कंठ से यह प्रार्थना गाई ''मोको कछु न चाहिए राम, मोको कछु न चाहिए राम .....,''
उस समय वातावरण इतना स्तब्ध था, और ऐसी अमृत वर्शा हो रही थी कि उपस्थित समुदाय के नेत्रों से अश्रुपात हो रहा था । पूज्य गुरूदेव ने पुनः कहा कि ''इसकी तहरीरी (लिखित) आज्ञा भी लिख दी है जो राम-सन्देश में निकाल दी जावेगी ।

इस प्रकार संतमत की परम्परा अनुसार अपने जीवन काल में ही परमपूज्य गुरूदेव ने पूज्य सरदार जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर रामाश्रम सत्संग का गुरूतर दायित्व सौंप दिया ।

पूज्य गुरूदेव के जितने दैवीगुण थे सबके सब आप में ज्यों के त्यों उतर आये हैं । प्रेम, दीनता, करूणा, दया और सेवा की आप जीती जागती मूर्ति हैं । दूसरों के दुःख में दुःखी और सुख में सुखी होना आपका स्वभाव है । आप विद्यार्थियों को, विधवाओं को तथा अन्य जरूरतमन्दों को बराबर गुप्तदान देते रहते हैं और किसी को इसके बारे में कुछ बताते नहीं हैं । क्षमा करना आपका स्वभाव बन गया है ।

अपने गुरूदेव परमसंत डॉ0 कृष्णलाल जी महाराज के मई, 1970 में महानिर्वाण के पश्चात गुरूदेव की आज्ञानुसार आपने रामाश्रम सत्संग के सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष का गुरूतर दायित्व ग्रहण किया **,o** आप रामाश्रम सत्संग की सेवा तन-मन-धन से सम्पूर्ण समर्पण के साथ कर रहे है तथा लाखों सत्संगियों की आस्था एवं विश्वास के केन्द्र विन्दु बनकर उनके गुरू-गोविन्द बन गए हैं । आपकी धर्मपत्नी गुरूमाता श्रीमती जोगिन्दर कौर सत्संग की सेवा और गुरूदेव के मिशन को आगे बढाने में आपके साथ निरंतर सहभागी **jgh** ।

13 tu]2012 dks iT; djrkj flag th viu s thou d s 100 o"k i.k dj jgs FkA lRlxh ifjokj bl 'kHk fnu dk mRl|drk ls irh{kk dj jgs Fks A tUe'krkCnh o"k ds xfjeke; vk;kstu dh r;kfj;kW gks jgh Fkh A ij bl'oj dh bPNk d|N vkSj gh Fkh A fiNys d|N le; ls vki i.k LoLFk ugh py jgs Fks A xHkhj :Ik ls vLoLFk gkus ij 24 ebZ 2012 dks vkidks xkft;kckn ds ;'kknk vLirky es Hkrh djk;k x;kA 13 tu 2012 dks vkidh 100oh o"kxkB x|:}kjs

lDVj 10 xkft;kckn e fo'k"k itk&vpuk ifo= x:ok.kh dk ikB dj eukbl xbl A ml le; vki vLirky e oUVhyVj ij Fk A ifjtuk rFkk leLr lRlxh ifjokj dh ikFkuk; b'oj u Lohdkj ugh dh A ijein ikflr dh vkj egk;k=k dk le; vk pdk Fkk A 15 tu dk 12%45 nkigj e vLirky e vkiu viu thou dh vfre lkl yh A bl u'oj 'kjhj dk R;kx dj vki cgeyhu gk x;s A viu vkjk/; d Hkkfrd 'kjhj d vfre n'ku dj viuh vJifjr J)ktyh vfir dju d fy;s Hkkbl&cguk dk tu&leg xkft;kckn e meM iMk A 16 tu 2012 dk ikr% 11-00 ct xkft;kckn d fgUMu foJke ?kkV ij i.kl fof/k&fo/kku d lkFk vkidk vfre lLdkj fd;k x;k A vkid cM cV lii= Jh ujUn flg th u Mk0 'kfDr dekj th d lkFk x:no dk e[kkfXu nh A

18 tu 2012 dk du[ky¼gfj}kj½ e vkidh vfLFk;k ifo= xxk e iokfgr dh xbl A

vk/;kfRed iFk ij ge lcdk ekxn'ku & mn/kkj dju gr iT;

Mk0 djrkj flg th d :lk e tk fn0; vkRek ekuo 'kjhj /kkj.k dj vorfjr gbl Fkh og viuh thou ;k=k i.kl dj cgeykd e foyhu gk xbl A

आप अपने प्रवचनों में अहंकार को खत्म करने, दीनता अपनाने तथा आचार–व्यवहार को शुद्ध बनाने पर विशेष बल देते हैं । आपका मानना है कि ''अहंकार से प्रभु नहीं मिलते । आप कोई भी साधन करें, दीनता को तो अपनाना ही होगा । जिसके भीतर में सच्ची दीनता है, वह स्वंय भी प्रसन्न रहता है और दूसरों को भी आनन्दित करता

है । प्रभु को दीनता बहुत प्यारी है ।'' आपके शब्दों में, ''अहंकार खत्म हो गया तो आत्मा व्यवहार करती है । आत्मा में दीनता है, आत्मा में प्रेम है, आत्मा में आनन्द है, जीवन है , चेतना है । आत्मा में न जरा है, न रोग है, न मरण । यदि ऐसा सफल जीवन चाहे, rk सच्ची दीनता को अपनाएँ । साधना इसके लिए यही है कि मन को, जो अहंकार से जकड़ा हुआ है, उसको वहाँ से निकाल कर, प्रभु की या गुरू के चरणों की रज बन जाएँ । अपने आप को पूर्ण रूप से मिटा दें । खाक बन जाँए । तब जाकर दीनता की अनुभूति हो सकेगी । हमारे विचार हमारी वाणी और हमारा व्यवहार ईश्वर मय हो जाना चाहिए । प्रार्थना करने, मनन करने, आचार-व्यवहार शुद्ध करने और सद्गुणों को अपनाने तथा सदव्यवहार करने के बिना रास्ता नहीं मिलेगा, साधना नहीं हो सकती ।''

धार्मिक पुस्तकें (विशेष रूप से गीता का 12वाँ अध्याय) महापुरूषों की वाणी तथा सत्संग-साहित्य नियमित रूप से पढ़ने, उस पर चिंतन-मनन करने तथा उसके अनुमार स्वयम को बनाने पर आप सदैव बल देते Fk ।

पूज्य डॉ0 करतार सिंह जी के प्रवचनों के 9 संकलन ''संत-प्रसादी'' रामाश्रम स त्संगद्वारा प्रकाशित किए गए हैं ।

डॉ0 करतार सिंह जी महाराज के श्री-चरणों में शत - शत नमन ।